		पृष्ठ.
३३.	२४ तीर्थंकरों के ५२ बोल	७७
३४.	गृहस्थों के जैन मंत्र से १६ संस्कार . .	९५
३५.	मृत्यु जानने के लिए ज्ञान	१३१
३६.	मरकर किस गति गया इसका ज्ञान	१३२
३७.	जबूद्वीप पन्नत्ती आचारांग सूत्र मे अनेक तीर्थों का लेख	१३३
३८.	चैत्य प्रतिष्ठा सामग्री	१३४
३९.	चैत्य प्रतिष्ठा विस्तार विधिः	१३५
४०.	आत्म रक्षा और १८ स्तुति देव वंदन	१४३
४१.	संक्षेप चैत्य प्रतिष्ठा विधिः	१५१
४२.	स्तूप प्रतिष्ठा विधिः विस्तार से	१५३
४३	द्वितीय स्तूप प्रतिष्ठा विधिः	१५५
४४.	कलश प्रतिष्ठा विधिः	१५६
४५.	दंडध्वज प्रतिष्ठा विधिः	१५८
४६.	गृह प्रतिष्ठा विधिः	१६०
४७.	शान्तिकार्थ जल यात्रा विधिः	१६२
४८.	शान्तिक पूजा विधिः	१६७
४९.	गुरु वर्णन	१७१
५०.	वीर प्रभू छद्मस्थ चूके नहीं इस पर सूत्रों का प्रमाण	१७५
५१.	आठ प्रभावीक यति गुरु का प्रमाण	१७८
५२.	धर्म तत्व १२ भावना स्वरूप	१८२
५३.	पांच दान स्वरूप पंचपात्र	१९२
५४.	दान निषेधक को सूत्रोपदेश	१९३
५५.	शीलधर्म स्वरूप	१९५
५६.	तपधर्म स्वरूप भाव की आवश्यकता	१९५
५७.	जीव विचार विवरण	१९७
५८.	नवतत्व विवरण	२०६
५९.	जीव तत्व की पहिचान	२४०
६०.	पुद्गल पहिचान	२४१

पृष्ठ.

६१. २४ दंडक गति आगति २४४
६२. चक्रवर्त्ति का स्वरूप २४६
६३. वासुदेव स्वरूप २४८
६४. जीव के अगली गति का बंध विचार २५१
६५. साधु बजने वाले दंभी को शिक्षा २५१
६६. २० विश्वा दया, धर्मी गृहस्थ १। विश्वा दया पाल सकता है २५२
६७. गृहस्थ धर्माचार भक्षाभक्ष २५३
६८. शतनय, एकेकनय आही मतोत्पत्ति ३६३ पाखंड स्वरूप २६३
६९. परमास्तिक छठवां जैनदर्शन स्वरूप ३६३ पाखंडी और षट्मत ही के एकांतपक्ष के ग्राहियों से भी पक्षवाले जैन दर्शन धर्म का दिग्विजय हुआ, ईश्वर कर्त्ता जगत् का इस पक्ष के मानने वाले सब से जैनधर्म का दिग्विजय हुआ २८१
७०. शिवमत, वैष्णवमत विसंवाद २९७
७१. महादेव परीक्षा हरि, हर, ब्रह्मा तीनों की १ मूर्त्ति नहीं, ज्ञान सम्यक्त्व, चारित्र, त्रिगुणात्मक अर्हंत मूर्त्ति एक रूप है ३०१
७२. लोक तत्व रागी, द्वेषी, हिंसक, कामी, लौकीकदेव के चरित्र और वीतराग इनके चरित्र व मुर्त्ति को देख किनकी पूजा करें ३०७
७३. द्विज निर्णय ३१८
७४. वेद स्मृति पुराणों में किंचित् जिन वचन ३२९
७५. नास्तिक शब्दार्थ, ईश्वर जगत् कर्ता नहीं महाजन (श्रावक) धर्म मुक्तिदाता, भारत का प्रमाण, ग्रंथ प्रशस्तिः ३७१